[Shri Sarada Mohanty]

provement due to the damages caused by the flood It is estimated that more than Rs 1,000 crores would be required for this purpose.

The State Government has moved the Centre for its assistance. The honourable Prime Minister visited this flood-affected area and promised to allocate Rs 50 crores, but nothing has been done as yet.

I am sorry that my friend, Shri Lenka, has given wrong information to the august House with a political motive. The Government of Orissa took prompt action to rehabilitate the flood-and-rain-affected people, and relief work was done immediately. Shri Biju Patnaik, the Chief Minister, asked two of his Cabinet Ministers to proceed to the spot and take all necessary action for relief work, and they are there till now.

Sir, I urge upon the Central Government to give sufficient monetary assistance to the State of Orissa, which is backward, to overcome the damages caused by rain and flood. Thank you, Sir.

Insidents in Lucknow-Delhi Mail on 6th January, 1991

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश) : मिस्टर वाइस चेयरमैन साहब, मैं आपके जरिए हाउस का ध्यान 6 जनवरी, 1991 को "लखनऊ से दिल्ली" गाडी के मुसाफिरों की समस्याओं और परेशानियों की तरफ दिलाना चाहता हूं।

मिस्टर वाइस चेयरमैन साहब, 6 जनवरी को पार्लियामेंट के इजलास मे शिरकत के लिए रात मे 10.00 बजे लखनऊ मेल, दिल्ली के लिए जो रवाना होती है, उसमें मैं और जनाब सिब्ते रजी साहब, एम पी, एक ही साथ सफर कर रहे थे। हमने स्टेशन पर जो कुछ देखा और हमारी मौजूदगी में जो कुछ हुआ, उस पर हम हाउस की तवज्जो दिलाना चाहते हैं।

मिस्टर वाइस चेयरमैन, दुर्घटना और आम मुसाफिरों के हक पर डकैती और जुल्म करने वाले, भारतीय कानून के दुश्मनों के हमलों की जानकारी मै आपके जरिए हुकूमत को तफसील के साथ देना चाहूंगा। लखनऊ मेल मे एक थ्री टायर बोगी पर अयोध्या से वापसी पर अपने को कार-सेवक कहने वालो ने जबर्दस्ती कब्जा कर लिया था। उस थ्री टायर बोगी में जिन मुसाफिरो का पहले से रिजर्वेशन था, वे लोग जबर्दस्त ठंडक मे प्लेटफार्म पर खडे रहे, रेलवे के अधिकारियों से अपनी सीटों की आजादी की फरियाद करते रहे और रेलवे स्टेशन पर अधिकारियों की तरफ से लाउड स्पीकर पर मुसलसल अनाउंस होता रहा "कि रेलवे पुलिस से अपील की जाती है कि एक बोगी पर कार-सेवकों नें जबर्दस्ती कब्जा करके मुसाफिरों को परेशान कर रखा है। तमाम कार-सेवकों को बोगी से निकाल दिया जाए, जो गैर कानूनी तौर पर मुसाफिरों का हक छीन रहे हैं'। थोड़ी देर के बाद पुलिस और कार-सेवको मे झडपे हुई मगर कार-सेवकों ने रिजर्वेशन करवाए हुए मुसाफिरों की सीट छोडने से कतई इंकार कर दिया। आखिरकार रेलवे ने ऐलान किया कि "जो लोग अपने-अपने टिकट लिए हुए हैं, टिकट को वापस करके रुपए वापिस ले लें और अपने-अपने घरों को चले जाएं"। मुसाफिरों मे ऐसे लोग भी थे श्रीमान, जिन्हें अपने बीमार रिश्तेदारो से दिल्ली पहुंचकर फौरन राबता कायम करना था। उन्ही मुसाफिरों में ऐसे लोग भी थे जिन्हे दिल्ली पहुंचकर फौरन एयर-पोर्ट पहुंचकर मुल्क के दूसरे शहरों में अपने बिजनेस, तिजारत और दूसरी जरूरियात के लिए परवाज करना था। कानून और अमन के दुश्मनों ने लॉ एण्ड आर्डर की धज्जियां लखनऊ मेल पर बिखेर दी थी और कानून के मुहाफिज पुलिस के लोग बेबस और मजबूर, तमाशाई बने देख रहे थे। ऐसे लोगों को कार-सेवक कहा जाता है तो फिर बेकार सेवक की क्या परिभाषा होगी। अगर इस तरह की हरकतों पर पाबंदी नही लगायी गयी तो मुल्क की हुकूमत से अवाम का एतमाद यकसर उठ जायेगा और पूरा देश जहन्नुम बन

जायेगा । पिछले दिनों इसी तरह के कार-सेवकों ने जौनपुर के पास तीन मासूम बच्चियों को चलती ट्रेन से फेंक कर अपने जानवर होने का सबूत दिया था जिसमे एक नन्ही सी बच्ची भी मौके ही पर शहीद हो गयी थी । हुकूमत से आपके माध्यम से मांग है कि तमाम रिजर्वेशन डिब्बों मे हिन्दुस्तानी मुसाफिरों और बाहर से भी आने वाली इसी देश को ट्रेनों मे सफर करते हैं उन तमाम मुसाफिरों की हिफाजत के लिये फोर्स लगायी जाये ताकि मुसाफिरों को इस तरह की मुसीबतों का सामना न करना पड़े । इस गंदे खेल को जितनी जल्दी हो हुकूमते हिंद की जिम्मेदारी है कि उसे बंद कर देना चाहिये । जो हुकूमत सैक्युलरिज्म को बचाने की दावेदार है, देश के आम इंसान की जानोमाल की हिफाजत भी इस हुकूमत को पूरी तरह करनी चाहिये।

आखिर में मैं यह कहना चाहूंगा कि :

"हवा यही जो रहेगी तो ए नकीबे बहार ।
कहां से आयेंगी रानाईयां चमन के लिये ।"

इस वक्त मेरी खुशनसीबी है कि हाउस में माननीय श्री सुबोध कान्त जी तशरीफ फरमाए है और उनके महकमे से मुताल्लिक यह जिम्मेदारी आयद होती है । जिस तरह से मुसाफिर गैर हिफाजती तौर पर चल रहे हैं, आज हम लोगों की यह बदनसीबी है कि मुल्क के लोगों को न दिन मे इस बात का यकीन है, न रात में इस बात का यकीन है कि घर से निकलने के बाद क्या वह घर हिफाजत के साथ वापिस आ पायेंगे ? वजारते दाखिला की यह जिम्मेदारी है कि निहायत जिम्मेदारी के साथ लॉ एंड आर्डर जिसे तबाह और बर्बाद करके रख दिया है उस पर कड़ी निगरानी रखे और मुजरिमों को कैफरे किरदार तक पहुंचाये वरना देश का भविष्य तबाह हो जाएगा और इस तरह के उग्रवादियों की आवाज और इस तरह से उग्रवादियों का जुल्म जम्हूरियत की आवाज को दबा लेगा तो हिंदुस्तान की तारीख को दुनिया अच्छे अल्फाज से याद नहीं करेगी । शुक्रिया ।

†[مولانا عبید اللہ خان اعظمی (اتر پردیش): مسٹر وائس چیرمین صاحب میں آپ کے ذریعے هاؤس کا دھیان ۲ جنوری ۱۹۹۱ کو دلکھنؤ سے دلی․․ ․زی کے مسافروں کی سمسیاؤں اور پریشانیوں کی طرف دلانا چاهتا هوں -

مسٹر وائس چیر مین صاحب - ۲ جنوری کو پارلیمنٹ کے اجلاس میں شرکت کیلئے رات میں ۱۰ بجے لکھنؤ میل دلی کیلئے روانہ هوتی ہے- اسمیں میں اور جناب سبط رضی صاحب - ایم - پی - ایک هی ساتھ سفر کر رهے تھے - هم نے اسٹیشن پر جو کچھ دیکھا اور هماری موجودگی میں جو کچھ هوا اس پر هم هاؤس کی توجہ دلانا چاهتے هیں -

مسٹر وائس چیر مین - دکھتا اور عام مسافروں کے حق پر ڈکیتی اور ظلم کرنے والے - بھارتیہ قانون کے دشمنوں کے حملوں کی جانکاری میں آپ کے ذریعے حکومت کو تفصیل کے ساتھ دینا چاهونگا - لکھنؤ میل ایک تھری ٹائر بوگی پر ایودھیا سے واپسی پر اپنے کو کار سیوک کہنے والوں نے زبردستی قبضہ کر لیا تھا - اس تھری ٹائر بوگی میں جن مسافروں کا پہلے سے رزرویشن تھا - وہ لوگ زبردست تھنڈک میں پلیٹ فارم پر

†Transliteration in Arabic Script.

کھڑے رہے - ریلوے کے ادھیکاریوں سے اپنی سیٹوں کی آزادی کی فریاد کرتے رہے - اور ریلوے اسٹیشن پر ادھیکاریوں کی طرف سے لاؤڈ اسپیکر مسلسل اناؤنس ہوتا رہا "کہ ریلوے پولیس سے اپیل کی جاتی ہے کہ ایک بوگی پر کار سیوکوں نے زبردستی قبضہ کرکے مسافروں کو پریشان کر رکھا ہے - تمام کار سیوکوں کو بوگی سے نکال دیا جائے - جو غیر قانونی طور پر مسافروں کا حق چھین رہے ہیں" تھوڑی دیر کے بعد پولیس اور کار سیوکوں میں جھڑپیں ہوئیں مگر کار سیوکوں نے رزرویشن کروائے ہوئے مسافروں کی سیٹ چھوڑنے سے قطعی انکار کر دیا - آخرکار ریلوے نے اعلان کیا کہ جو لوگ اپنے اپنے ٹکٹ لئے ہوئے ہیں - ٹکٹ واپس کرکے روپئے واپس لے لیں اور اپنے اپنے گھروں کو واپس چلے جائیں -" مسافروں میں ایسے لوگ بھی تھے - شریمان- جنہیں اپنے بیمار رشتہ داروں سے دلی پہونچکر فوراً رابطہ قائم کرنا تھا - انہیں مسافروں میں ایسے لوگ بھی تھے جنہیں دلی پہونچکر فوراً ایرپورٹ پہونچکر ملک کے دوسرے شہروں میں اپنے بزنس - تجارت اور دوسری ضروریات کیلئے پرواز کرنا تھا - قانون اور امن کے دشمنوں نے لا اینڈ آرڈر کی دھجیاں

اڑا کر مقتل پر بکھیر دیں تھیں - اور قانون کے محافظ پولیس کے لوگ بے بس اور مجبور - تماشائی بنے دیکھ رہے تھے - ایسے لوگوں کو کار سیوک کہا جاتا ہے پھر بے کار سیوک کی کیا پریبھاشا ہوگی - اگر اس طرح کی حرکتوں پر پابندی نہیں لگائی گئی تو ملک کی حکومت سے عوام کا اعتماد یکسر اٹھ جائیگا - اور پورا دیش جہنم بن جائیگا - پچھلے دنوں اسی طرح کار سیوکوں نے جونپور کے پاس تین معصوم بچیوں کو چلتی ٹرین سے پھینک کر اپنے جانور ہونے کا ثبوت دیا تھا- جسمیں ایک ننھی سی بچی بھی موقع ہی پر شہید ہو گئی تھی - حکومت سے آپ کے مادھیم سے مانگ ہے کہ تمام رزرویشن ڈبوں میں ہندوستانی مسافر اور باہر سے بھی آنے والے اسی دیش کی ٹرینوں میں سفر کرتے ہیں ان تمام مسافروں کی حفاظت کیلئے فورس لگائی جائے - تاکہ مسافروں کو اس طرح کی مصیبتوں کا سامنا نہ کرنا پڑے - اس گندے کھیل کو جتنی جلدی ہو حکومت ہند کی ذمہ داری ہے کہ اسے بند کر دینا چاہئے - جو حکومت سیکولرازم کو بچانے کی دعویدار ہے دیش کے تمام انسان کی جان و مال کی حفاظت بھی اس حکومت کو پوری طرح کرنی چاہئے -

آخر میں میں یہ کہنا چاہونگا کہ :

"ہوا یہی جو رہے گی تو ایسے نقیب بہار
کہاں سے آئیں گی رعنائیاں چمن کیلئے-"

اس وقت میری خوش نصیبی ہے کہ ہاؤس میں مانیئے شری سبودھ کانت جی تشریف فرما ہیں- اور انکے محکمے سے متعلق یہ ذمہداری عائد ہوتی ہے - جس طرح سے مسافر غیر حفاظتی طور پر چل رہے ہیں - آج ہم لوگوں کی یہ بد نصیبی ہے - کہ ملک کے لوگوں کو نہ دن میں اس بات کا یقین ہے نہ رات میں اس بات کا یقین ہے کہ گھر سے نکلنے کے بعد کیا وہ گھر حفاظت کے ساتھ واپس آ پائیں گے - وزیر داخلہ کی یہ ذمہداری ہے کہ جمہوریت ذمہداری کے ساتھ کا ایک جسے تباہ و برباد کرکے رکھدیا ہے اس پر کڑی نگرانی رکھیں اور مجرموں کو کیفر کردار تک پہنچائیں ورنہ دیش کا بھوشیہ تباہ ہو جائے گا - اور اس طرح کے اگروادیوں کی آواز اور اس طرح سے اگروادیوں کا ظلم جمہوریت کی آواز کو دبا لے گا تو ہندوستان کی تاریخ کو دنیا اچھے الفاظ سے یاد نہیں کرے گی - شکریہ-]

श्री आनन्द प्रकाश गौतम (उत्तर प्रदेश). मैं भी इसके साथ अपने आपको सम्बद्ध करते हुए मांग करता हूं कि इस घटना की पूरी-पूरी जांच और उसके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिये क्योंकि मैं भी उस रेल में सफर कर रहा था।

एक सम्मानित सदस्य : उसी डिब्बे में या उसी ट्रेन में... (**व्यवधान**)

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : डिब्बे में नहीं थे मान्यवर, उपसभाध्यक्ष महोदय। जब जेबकतरा जेब काटकर भीड में भागता है और लोग चोर चोर चिल्लाने लगते हैं तो वह जेबकतरा सबसे पहले चिल्लाने लगता है--चोर, चोर, चोर। इसलिए क्या पता है यह और ही लोग हों बदनाम करने वाले कारसेवकों को।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : इसलिये मैं अर्ज करना चाहता हूं कि सर, उस पर बाकायदा कार सेवकों ने कार सेवक लिख दिया था और अगर वह चोर ही थे तो उन्होंने अपनी टोपी के जरिये बताया था कि वह किस तरह के चोर है.... (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह) : ठीक है, आपकी बात खत्म हो गयी।

†[شری عبید اللہ خاں اعظمی : اسی لئے میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ سر - اس پر باقاعدہ کارسیوکوں نے کارسیوک لکھدیا تھا اور اگر وہ چور ہی تھے انہوں نے اپنی ٹوپی کے ذریعے بتلایا تھا کہ وہ کس طرح کے چور ہیں ... (مداخلت)]

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी और जिस तरह का कपडा पहन रखा था उस पर लिख रखा था और उस पर भी बताया था कि यह किस तरह के चोर है। उस पर कार सेवक लिखा हुआ था और बाकायदा ट्रेन के डिब्बे को जिस तरह से कोई पैसा देकर के अपने तौर पर स्पेशली बुक कराता है... (**व्यवधान**)

उपसभाध्यक्ष : नहीं-नहीं, आपकी बात पूरी हो गयी।

---

†Transliteration in Arabic Script.

†[مولانا عبید اللہ خاں اعظمی :

اور جس طرح کا کوڑا پیش رکھا تھا اس پر لکھ رکھا تھا اور اس پر بھی بتایا تھا کہ یہ کس طرح کے چور ہیں - اس پر کارسپوک لکھا ہوا تھا اور باقاعدہ ٹرین کے ڈبے کو جس طرح سے کوئی پیسہ دیکر کے اپنے طور پر اسپیشلی بک کراتا ہے - ....(مداخلت)]

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : इस तरह से देश की सम्पत्ति का भी नुकसान किया गया और देश के कानून की गरिमा का भी। मैं चाहूंगा वजीरे दाखिला इस सिलसिले मे फौरी तौर पर एक बयान देकर तमाम हाउस को मुतमाईन करें कि आयंदा इस सिलसिले मे वह क्या कार्यवाही करना चाहते हैं ? श्री सुबोध कान्त जी यहा मौजूद है। उनसे चाहूंगा कि वह अपना बयान दें और यकीन दिलायें कि मुल्क के लोगों को ट्रेन मे अपनी फोर्स के जरिये किस तरह की सुविधा देते हुए लोगों की हिफाजत की जिम्मेदारी लेना चाहते है।

†[مولانا عبید اللہ خاں اعظمی :

اس طرح دیش سے دیش کی سمپتی کا بھی نقصان کیا گیا اور دیش کے قانون کی گریما کا بھی - میں چاہوں‌گا وزیر داخلہ اس سلسلہ میں فوری طور پر ایک بیان دیکر تمام هاؤس کو مستعد کریں کہ آئندہ اس سلسلہ میں وہ کیا کاروائی کرنا چاہتے ہیں - شری سبودھ کانت سہائے جی یہاں موجود ہیں- ان سے چاہوں‌گا کہ وہ اپنا بیان دیں اور یقین دلائیں کہ ملک کے لوگوں کو ٹرین میں اپنی فورس کے ذریعہ کسی طرح کی سویدھا دیتے ہوئے لوگوں کی حفاظت کی ذمہ داری لینا چاہتے ہیں -]

†Transliteration in Arabic Script.

Demand for early decision on pension Scheme for working Journalists

SHRI KAPIL VERMA (Uttar Pradesh): Mr. Vive-Chairman, Sir, I am grateful to you for giving me an opportunity to raise an important issue.

The working journalists are greatly concerned about the inordinate delay on the part of the Government in enforcing a pension scheme for working journalists and other employees of news agencies in the country.

The matter is under consideration since February, 1988 when the then Finance Minister, Mr. N.D. Tewari announced the Government's intention to frame such a scheme. An expert committee was appointed after several months, and it submitted its report in June, 1989 making definite proposals for framing a scheme of pension for working journalists and other employees of newspapers and news agencies.

After sitting on the report for some time the Government announced that a pension scheme would be framed for all categories of industrial employees and not merely journalists and other employees of newspaper agencies. But this requires a lot of preparatory work that will take a long time. The result is that neither journalists nor other industrial workers will get the pension at an early date. Thus the elements opposed to the grant of such pension for journalists have succeeded in sabotaging the move by putting it in cold storage for all practical purposes.

Journalists are not opposed to other industrial workers getting this benefit. In fact, they very much support it. They